WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-5
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(May 2025)

भारतीय इतिहास निर्माण में पुराणों की भूमिका: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

आलोक कुमार पाण्डेय
सह-प्राध्यापक

शोध सार

भारतीय इतिहास के सारगर्भित साक्ष्य को अंतर्मन से समझने एवं जानने के लिए भारतीय साहित्य के प्राचीन साक्ष्यों को जानना अति आवश्यक है। जो धार्मिकता के साथ-साथ लौकिकता की पराकाष्ठा की तरफ संकेत करते हुए दिखाई पड़ते हैं। जिसमें वेद, ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषदों एवं स्मृतियों के अलावा पुराणों को अति महत्वपूर्ण स्थान इतिहासविदों द्वारा दिया गया है। डॉ. विण्टरनिट्ज ने लिखा है कि "पुराणों में दी गई वंशावलियां राजनीतिक इतिहास के निर्माण में आधुनिक इतिहासकारों के लिए एवं पुरातत्वविदों के लिए हमेशा सहायक सिद्ध हुई हैं।" जिसमें हिंदू धर्म की पौराणिकता ईश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, भगवतवासल्य, दर्शन, अंधविश्वासों त्योहारों प्रथाओं एवं नैतिक नियमों को जानने और समझने का समुचित साधन प्राप्त होता है।

बीज शब्द

लौकिकता, पराकाष्ठा, पुरातत्व, ईश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, भगवतवासल्य, पौराणिकता, उपादेयता, नंद वंश, महापद्मनंद, शिशु नाग, सातवाहन, गुप्त।

शोध विस्तार

पुराणों का अध्ययन करने के पहले उसके अर्थ को समझना चाहिए। पुराण शब्द का अर्थ है 'प्राचीन' अर्थात ऐसे कथानक जो अतीत के गहरे सत्य को रेखांकित करते हैं। जिसमें प्राचीन राजाओं एवं उनके कृत्यों का स्वच्छंद रूप से वर्णन किया गया है। पुराणों के रचयिता लोमहर्ष और उग्रश्रवा को माना जाता है। कुछ पारंपरिक मान्यता के अनुसार महर्षि वेद व्यास को भी इनके संकलन कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मुख्य रूप से 18 पुराणों एवं 29 उपपुराणों का उल्लेख प्राप्त होता है। पार्जिटर नामक एक विद्वान ने आधुनिक काल में पुराणों की तरफ

लोगों का ध्यान आकर्षित किया उन्होंने अपनी पुस्तक 'एन्शिएन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशंस एवं डायनेस्टीज ऑफ कलिएज' में इसका उल्लेख किया है। जिस पर रोमिला थापर ने अपने विचार प्रस्तुत कर उसकी उपयोगिता को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

हालांकि प्राचीन साहित्य में नारद मुनि ने पुराणों को पंचम वेद कहा है। वही अथर्ववेद में सर्वप्रथम पुराण शब्द का उल्लेख इसकी प्राचीनता को और पीछे ले जाता हुआ दिखाई पड़ता है। इसी तरह गोपथ ब्राह्मण पांच वेदों की बात कहता है जिसमें इतिहास वेद और पुराण को अलग-अलग दिखाने का प्रयास भी करता है। यही नहीं शतपथ ब्राह्मण में अश्वमेघ यज्ञ के समय चलने वाले पारिप्लवाख्यान में इतिहास पुराण का प्रवचन सूत के द्वारा किया जाता था, जिसका उल्लेख प्राप्त होता है। मौर्य काल में कौटिल्य राजा को संकेत करता है कि पुराणवेत्ता को एक सहत्र वेतन दिया जाए। कालांतर में बाण, कुमारिलभट्ट, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य अलबरूनी जैसे विद्वानों ने भी पुराणों के मर्म को समझा और अपनी कृतियों में उनका उपयोग भी किया।

प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रंथ को पुराण कहते हैं। संभवतः पांचवी से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक पुराण अस्तित्व में आ चुके थे। पुराणों में प्राचीन महापुरुषों, देवताओं, ऋषियों, धार्मिक नियमों, राजनीतिक विषयों एवं मानव जीवन के आदर्शों एवं कर्तव्यों आदि का उल्लेख किया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में पुराणों के मुख्य रूप से पांच लक्षण बताए गए हैं यह हैं- सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर तथा वंशानुचरित। इस प्रकार प्रत्येक पुराण इन पांच भागों में विभक्त है। कुल पुराणों की संख्या 18 है जिसमें विष्णु, मत्स्य, वायु, ब्राह्मण तथा भागवत पुराण सर्वाधिक ऐतिहासिक महत्व के हैं। क्योंकि इनमें राजाओं की वंशावलियां पाई जाती हैं। 18 पुराणों में सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक मत्स्य पुराण है। इसके द्वारा सातवाहन वंश के विषय में विशेष जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण से मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की एवं वायु पुराण से शुंग वंश एवं गुप्त वंश के विषय में विशेष जानकारी मिलती है। इस प्रकार पुराणों से हमें शिशुनाग, नंद, मौर्य, सातवाहन एवं गुप्त वंश के विषय में ज्ञान होता है। मार्कंडेय पुराण मुख्यतः देवी दुर्गा से संबंधित है। इसी में दुर्गा सप्तशती नामक अंश शामिल है। अग्नि पुराण में तांत्रिक पद्धति का उल्लेख है। इसी पुराण में गणेश पूजा का प्रथम बार उल्लेख मिलता है।

पुराणों में अंतर्निहित ऐतिहासिकता

मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले प्रथम राजवंश के विषय में पुराणों में विवरण मिलता है। पुराणों के अनुसार मगध पर सर्वप्रथम बार्हद्‌थ वंश का शासन था। इसी वंश का राजा जरासंध था। जिसने गिरिब्रज को अपनी राजधानी बनाई थी। पुराणों तथा बौद्ध ग्रंथों में वर्णित मगध के राजाओं के क्रम की आलोचनात्मक समीक्षा करने के पश्चात बौद्ध ग्रंथों का क्रम अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। उनके अनुसार मगध का प्रथम शासक बिंबिसार था। पुराणों के अनुसार बिंबिसार ने करीब 28 वर्ष तक शासन किया। पुराणों के अनुसार पाटलिपुत्र नगर की स्थापना अजातशत्रु के पुत्र उदायिन ने की थी। पुराणों में विवरण मिलता है कि अवंती के प्रद्योत वंश का विनाश शिशुनाग ने किया था। पुराणों से पता चलता है कि शिशुनाग ने अपने पुत्र को बनारस का उपराजा बनाया था। दीपवंश में बिंबिसार के पिता का नाम बोधिस मिलता है, जो राजगृह का शासक था। मत्स्य पुराण में उसका नाम क्षेत्रौजस दिया गया है। शिशुनाग नागवंश से ही संबंधित था। महावंश टीका में उसे एक लिच्छवि राजा की वेश्या से उत्पन्न कहा गया है। पुराण उसे क्षत्रिय मानते हैं। पुराणों का कथन अधिक सही लगता है क्योंकि यदि वह वेश्या की संतान होता तो रूढ़िवादी ब्राह्मण उसे कभी भी राजा स्वीकार न करते तथा उसकी निंदा भी करते। पुराणों से विवरण ज्ञात होता है कि पांच प्रद्योत पुत्र 138 वर्षों तक शासन करेंगे।

शिशुनाग ने सम्भवतः 412 ईसा पूर्व से लेकर 394 ईसा पूर्व तक शासन किया। महावंश के अनुसार उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र कालाशोक राजा बना। पुराणों में उसी को काकवर्ण कहा गया है। पुराणों के अनुसार नंदी वर्धन शिशुनाग वंश का अंतिम राजा था । जिस व्यक्ति ने शैशुनाग नाग वंश का अंत कर नंद वंश की स्थापना की वह निम्न वर्ण से संबंधित था। उसका नाम विभिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न दिया गया है। पुराण उसे महापदम कहते हैं। पुराणों के अनुसार महापद्मनंद शैशुनाग वंश के अंतिम राजा महानन्दिन की शुद्र स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। विष्णु पुराण में कहा गया है कि वह महानंदी की शूद्र से उत्पन्न महापदम अत्यंत लोभी तथा बलवान एवं दूसरे परशुराम के समान सभी क्षत्रियों का विनाश करने वाला होगा। इस प्रकार नंद वंश शूद्र अथवा निम्न वर्ण से संबंधित था। पुराणों के विवरण से स्पष्ट है कि इस वंश का संस्थापक क्षत्रिय पिता तथा शूद्र माता की संतान था। महापद्मनंद की विजयों के विषय में

हमें पुराणों से विस्तृत सूचना प्राप्त होती है। उसने एकछत्र शासन की स्थापना की तथा एकराट की उपाधि ग्रहण की। उसके द्वारा उन्मूलित कुछ राजवंशों के नाम इस प्रकार हैं- इक्ष्वाकु, पांचाल, काशेय, हैहय, कलिंग, अश्मक, कुरु, मैथिल, शूरसेन वितिहोत्र। पुराणों में इन सभी राज्यों के शासकों को समकालीन बताया गया है तथा विभिन्न राजवंशों के शासन काल के विषय में भी सूचना मिलती है। पुराणों में महापद्मनंद के शासन की अवधि 88 वर्ष बताते हैं जो भ्रामक प्रतीत होता है। संभवत: पुराणों में 28 वर्षों को भूल से 88 लिख दिया गया है। वह नि:संदेह उत्तर भारत का प्रथम महान ऐतिहासिक सम्राट था। पुराणों में बिंबिसार से नंदों तक के राजाओं का राज्यकाल का विवरण मिलता है जो कि इस प्रकार है-

शिशुनाग-40 वर्ष
काकवर्ण-26 वर्ष
क्षेमधर्मन-36 वर्ष
क्षेमजित अथवा क्षत्रौजस-24 वर्ष
बिंबिसार-28 वर्ष
अजातशत्रु-27 वर्ष
दर्शक-24 वर्ष
उदायिन-33 वर्ष
नंदी वर्धन 40 वर्ष
महानन्दिन-43 वर्ष
महापद्मनंद तथा उसके आठ पुत्र-100 वर्ष (कुछ विद्वानों के अनुसार 40 वर्ष)

पुराणों में सातवाहन वंश को आंध्र भृत्य एवं आंध्र जातीय कहा गया है। यह इस बात का सूचक है कि जिस समय पुराणों का संकलन हो रहा था सातवाहनों का शासन आंध्र प्रदेश में ही सीमित था। इस वंश की स्थापना सिमुक नामक व्यक्ति ने लगभग 60 ईसा पूर्व में कण्व वंशी सुशर्मा की हत्या करके की। पुराणों में सिमुक को सिंधुक, शिशुक, शिप्रक एवं वृषल आदि नाम से संबोधित किया गया है। पुराणों के अनुसार सिमुक के बाद उसके छोटे भाई कृष्ण ने करीब 18 वर्ष तक शासन किया। पुराणों के अनुसार कृष्ण का पुत्र एवं उत्तराधिकारी शातकर्णी प्रथम

शासक हुआ। यह सातवाहन वंश का प्रथम शातकर्णी उपाधि धारण करने वाला राजा था। पुराणों के अनुसार शातकर्णी ने करीब 56 वर्ष तक शासन किया। इसने सातवाहनों की सार्वभौम सत्ता का दक्षिण में विस्तार किया। मत्स्य पुराण के अनुसार राजा हाल सातवाहन वंश का 17वां राजा था। इसका शासन काल संभवतः 20 ई. से 24 ई. तक था। राजा हाल ने गाथासप्तशती नामक ग्रंथ की एक मुक्त काव्य ग्रंथ लिखा। सातवाहन वंश के प्रतापी शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी को पुराणों में सातवाहन वंश का 23वां राजा माना गया है। इसने 106-130 ई. तक शासन किया। सातवाहन वंश का 27वां शासक यज्ञश्री शातकर्णी इस वंश का अंतिम प्रतापी राजा के रूप में गद्दी पर बैठा। उसने शकों द्वारा जीते गए अपने भू भागों को पुनः जीता। उसके विषय में वायु पुराण से जानकारी मिलती है। पुराणों के अनुसार इसने करीब 29 वर्ष तक शासन किया इसका शासन काल 174 ई. से 203 ई. तक था।

गुप्त राजवंश का इतिहास साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों प्रमाणों से प्राप्त होता है। साहित्यिक साधनों में पुराण सर्वप्रथम हैं।जिसमें मत्स्य पुराण, वायु पुराण, ब्रह्मपुराण तथा विष्णु पुराण द्वारा प्रारंभिक शासको के बारे में जानकारी मिलती है। गुप्तों के मूल निवास के संबंध में पुराणों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि गुप्तों का आदि संबंध मगध से था। विंटरनित्ज का विचार है कि विष्णु पुराण गुप्तकालीन रचना है। अत: इसे गुप्तों के इतिहास के संबंध में प्रामाणिक माना जा सकता है। विष्णु पुराण की कुछ पांडुलिपियों में 'अनुगंगा प्रयागं मागधा: गुप्ताश्च भोक्ष्यन्ति' अर्थात प्रयाग तथा गंगा के किनारे के प्रदेश पर मगध के गुप्त लोग शासन करेंगे, उल्लेखित मिलता है । ढाका से प्राप्त इस पुराण की तीन पांडुलिपियों में 'अनुगंग प्रयागं मागधा: गुप्ताश्च मागधान् भोक्ष्यन्ति' उल्लेख है। उपर्युक्त दोनों ही पाठों में मागधा: शब्द 'गुप्ताश्च' के विश्लेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इससे स्पष्ट है कि या तो मगध गुप्तों का मूल निवास था या उनके राज्य में सम्मिलित था। वायु पुराण में किसी गुप्त शासक की साम्राज्य सीमा का वर्णन करते हुए बताया गया है की गंगा नदी के किनारे प्रयाग तथा साकेत और मगध के प्रदेशों का गुप्त वंश के लोग उपभोग करेंगे। मगध के साथ गुप्तों के मूल संबंध को ध्यान में रखकर ही पुराण गुप्तों को 'मागध गुप्त' कहते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि पुराण न केवल ईसा पूर्व छठी शताब्दी की जानकारी का एकमात्र साधन हैं अपितु छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के बाद गुप्त काल के विविध आयामों को रेखांकित करने का प्रयास भी पुराणों में किया गया है। रोमिला थापर जैसी इतिहासकार भी पुराणों की ऐतिहासिक उपयोगिता पर नवीनतम रूप में प्रकाश डालते हुए दिखाई पड़ती हैं। उन्होंने राजवंशों की वंशावलियों के लिए ही नहीं अपितु उसके सामाजिक, आर्थिक उपागम को भी रेखांकित करने के साथ ही साथ उस काल के कबीलाई जीवन, उनके संगठन के मूलाधार को भी रूपायित करने में पुराणों के योगदान को प्रमुख माना है। पुराणों के आधार पर प्राचीन भारत की भौगोलिक दशाओं एवं प्राचीन नगरों की स्थिति का भी ज्ञान प्राप्त होता है। पुराण हमें प्राचीन नगरों के बीच की दूरी का भी ज्ञान करते हैं। कोलकाता के श्री डे बताते हैं कि "पुराण प्राचीन पर्वतों, नगरों एवं नदियों का उल्लेख उनके तात्कालिक नाम से करते हैं। इस प्रकार पुराण प्राचीन काल से लेकर गुप्त काल के इतिहास से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का परिचय कराते हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के पहले के प्राचीन इतिहास के निर्माण के लिए पुराण ही एकमात्र स्रोत हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. चौबे सौरभ, प्राचीन भारत, यूनिवर्सल बुक्स अल्लापुर, प्रयागराज (उ.प्र.) पृष्ठ संख्या 17.
2. थापर रोमिला, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 24.
3. श्री माली, झा, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली, पृष्ठ संख्या 113.
4. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 121.
5. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 129.
6. सामान्य अध्ययन, यूनिक पब्लिकेशन, दयानंद ब्लॉक, मधुबन मार्ग शकरपुर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 60-61.